

अभ्यासवान् भव

दशमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्



1075

विद्यया ऽ मृतमश्नुते



एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

1075 – अभ्यासवान् भव

दशमकक्षायाः संस्कृतस्य अभ्यासपुस्तकम्

ISBN 978-93-5292-141-6

प्रथम संस्करण

मई 2019 ज्येष्ठ 1941

पुनर्मुद्रण

अक्टूबर 2019 अश्विन 1941

फरवरी 2021 माघ 1942

नवंबर 2021 अग्रहायण 1943

मार्च 2024 चैत्र 1946

अगस्त 2024 श्रावण 1946

दिसंबर 2024 अग्रहायण 1946

PD 30T BS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2019

₹ 105.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा जैना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए33/2, साहिबाबाद औद्योगिक क्षेत्र, साइट-IV (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक को बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक को पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। खड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पच्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016

फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फोर्ट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्टेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बंगलुरु 560 085

फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014

फ़ोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114

फ़ोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021

फ़ोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	:	एम.वी. श्रीनिवासन
मुख्य संपादक	:	विज्ञान सुतार
मुख्य उत्पादन अधिकारी (प्रभारी):	:	जहान लाल
मुख्य व्यापार प्रबंधक	:	अमिताभ कुमार
सहायक उत्पादन अधिकारी	:	दीपक कुमार

आवरण एवं चित्र

डी.टी.पी. प्रकोष्ठ

पुरोवाक्

भारतस्य शिक्षाव्यवस्थायां संस्कृतस्य महत्त्वमुद्दिश्य विद्यालयेषु संस्कृत-शिक्षणार्थम् आदर्श-पाठ्यक्रम-पाठ्यपुस्तकादिसामग्रीविकासक्रमे राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषदः भाषाशिक्षाविभागेन षष्ठवर्गादारभ्य द्वादशकक्षापर्यन्तं राष्ट्रियपाठ्यचर्यानुरूपं संस्कृतस्य आदर्शपाठ्यक्रमं निर्माय पाठ्यपुस्तकानि निर्मायन्ते। अस्मिन्नेव क्रमे दशमकक्षायाः छात्राणां संस्कृतव्याकरणस्य अभ्यासार्थं चतुर्दशाध्यायेषु निर्मितस्य “अभ्यासवान् भव” इति नामधेयस्य अभ्यासपुस्तकस्य संस्करणं प्रस्तूयते। अत्र अपठितावबोधनेन सह पत्रलेखनम्, अनुच्छेदलेखनम्, रचनानुवादः, चित्रवर्णनम्, सन्धिः, समयः, वाच्यम्, अशुद्धिसंशोधनं, प्रत्ययसमासाव्ययप्रयोगः इति विषयेषु अभ्यासक्रमाः दत्ताः येन छात्रेषु संस्कृतभाषाकौशलानां विकासो भवेत्। एतदतिरिच्य मिश्रिताभ्यासद्वयम् आदर्शप्रश्नपत्रमेकम् अपि प्रदत्तं येन छात्राः भाषाकौशलेन सह परीक्षायाः कृतेऽपि सन्नद्धाः भवेयुः। परिशिष्टे ध्येयवाक्यानां, व्यवहारवाक्यानां चापि सन्निवेशः कृतः येन कक्षायामपि छात्राः संस्कृतभाषया सम्भाषणे समर्थाः भवेयुः। अनेन पुस्तकेन छात्राः संस्कृतस्य भाषाप्रयोगे दक्षाः भवेयुः इति एतदर्थमपि पुस्तकेऽस्मिन् प्रयत्नो विहितः।

पुस्तकस्यास्य प्रणयने आयोजितासु कार्यगोष्ठीषु आगत्य यैः विशेषज्ञैः अनुभविभिः संस्कृताध्यापकैश्च परामर्शादिकं दत्त्वा सहयोगः कृतः, तान् प्रति परिषदियं स्वकृतज्ञतां प्रकटयति। पुस्तकमिदं छात्राणां कृते उपयुक्ततरं विधातुम् अनुभविनां विदुषां संस्कृत-शिक्षकाणां च सत्परामर्शाः सदैवास्माकं स्वागतार्हाः।

नवदेहली
मार्च, 2019

हृषिकेशः सेनापतिः
निदेशकः
राष्ट्रियशैक्षिकानुसन्धानप्रशिक्षणपरिषद्

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक ¹[संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,
प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और ²[राष्ट्र की एकता
और अखंडता] सुनिश्चित करने वाली बंधुता
बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख
26 नवंबर, 1949 ई. को एतद्वारा इस संविधान को
अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य" के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) "राष्ट्र की एकता" के स्थान पर प्रतिस्थापित।

पुस्तक निर्माण समिति

सदस्य

आभा झा, पी.जी.टी. संस्कृत, गार्गी सर्वोदय कन्या विद्यालय, ग्रीन पार्क, नयी दिल्ली
 कीर्ति कपूर, प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
 गजानन धरेन्द्र, टी.जी.टी. संस्कृत, सर्वोदय बाल विद्यालय नं. 2, सी-ब्लॉक, जनकपुरी, नयी दिल्ली
 लता अरोड़ा, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, केंद्रीय विद्यालय नं 3, दिल्ली कैंट, नयी दिल्ली
 वेदप्रकाश मिश्र, असिस्टेंट प्रोफेसर, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
 वी.वी. भट्ट, टी.जी.टी. संस्कृत, केन्द्रीय विद्यालय, हासन, कर्नाटक
 शशिपाल शर्मा, निदेशक, जयति संस्कृतम्, नोएडा
 सरोज गुलाटी, पी.जी.टी. संस्कृत, कुलाची हंसराज मॉडल पब्लिक स्कूल, अशोक विहार, दिल्ली
 सरोज पुरी, सेवानिवृत्त, टी.जी.टी. संस्कृत, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पीतम पुरा, नयी दिल्ली

समन्वयक

के.सी.त्रिपाठी, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली
 जतीन्द्र मोहन मिश्र, प्रोफेसर संस्कृत, भाषा शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली



आभार

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पुस्तक निर्माण समिति के सभी सदस्यों के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती है। परिषद् अनीता, रेखा, डी.टी.पी. ऑपरेटर, रिकेश भदूला, जे.पी.एफ., भाषा शिक्षा विभाग एवं पुस्तक के संपादन के लिए ममता गौड़, संपादक-संविदा, प्रवीन कुमार, नरेश कुमार, आरती, डी.टी.पी. ऑपरेटर, प्रकाशन प्रभाग, के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करती है।

© NCERT
not to be republished



भूमिका

गच्छन् पिपीलिको याति योजनानां शतान्यपि ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

शुद्ध भाषा प्रयोग के लिए और ग्रन्थों के भावों को आत्मसात् करने के लिए व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। यद्यपि व्याकरण का प्रत्यक्ष ज्ञान देने का प्रचलन आज की शिक्षा पद्धति में नहीं है, पाठों में प्रयुक्त व्याकरण-बिंदुओं को अनेक उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट किया जाता है। इस तरह व्याकरण के नियमों को स्मरण करने की नीरस प्रक्रिया से बच्चों को गुजरना नहीं पड़ता और व्याकरण वाक्य संरचना का नियमानुसार ज्ञान भी हो जाता है।

अभ्यासवान् भव में दशम कक्षा के विद्यार्थियों को पाठ्यक्रमानुसार अभ्यास हेतु पर्याप्त सामग्री उपलब्ध कराई गई है, जिससे वे न केवल आवश्यक व्याकरण-बिंदुओं से परिचित होते हैं, बल्कि वाक्य संरचना कौशल का पर्याप्त ज्ञान भी प्राप्त करते हैं। पुनः-पुनः अभ्यास करने से विषयों का ज्ञान हो जाता है और वह स्मृत विद्या चिरकालपर्यन्त याद रहती है। 'अभ्यासे विषं विद्या' यह जानते हुए विद्यार्थियों को पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। इस अभ्यास पुस्तिका में अपठितांश, पत्र, चित्रवर्णन, अनुच्छेदलेखन, संस्कृतानुवाद, सन्धि, समास, प्रत्यय, अव्यय, समय, वाच्य और अशुद्धि संशोधन पर आधारित बारह पाठ हैं। इसके अतिरिक्त मिश्रित अभ्यास हेतु दो कार्यपत्रिकाएँ त्रयोदश पाठ में समाविष्ट की गई हैं। चतुर्दश पाठ में केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुसार एक आदर्श प्रश्न पत्र भी समाविष्ट किया गया है, जो परीक्षा हेतु तैयारी में सहायक होगा।

परिशिष्ट में ध्येय-वाक्यों और व्यवहार-वाक्यों का संकलन है, जिससे छात्रों की संभाषण क्षमता में वृद्धि होगी।

आशा है यह अभ्यास पुस्तिका छात्रों को संस्कृत भाषा-संरचना, व्याकरण एवं संस्कृत व्यवहार का अभ्यास कराने में सफल होगी। पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुधी समालोचकों के सत् परामर्शों का सदैव स्वागत है।

मङ्गलम्

अभ्यासं कार्यसिद्ध्यर्थं
नित्यं कुर्वन्ति पण्डिताः।
संसारे सिद्धिमन्त्रोऽयं
तस्मादभ्यासवान्भव॥

कार्य की सिद्धि के लिए समझदार लोग नित्य अभ्यास करते हैं। यह (अभ्यास) संसार में सिद्धि (प्राप्त करने) का मंत्र है। इसलिए (तुम भी) अभ्यास करने वाले बनो।

अभ्यसामो वयं विद्यां
यावतीमधिकाधिकाम्।
तावदग्रे जगत्यस्मिन्
सरिष्यामो न संशयः॥

हम विद्या का जितना अधिक से अधिक अभ्यास करते हैं, संसार में उतना ही आगे बढ़ेंगे इसमें संदेह नहीं है।



विषयानुक्रमणिका

पुरोवाक्	iii
भूमिका	vii
मङ्गलम्	viii
1. अपठितावबोधनम्	1
2. पत्रलेखनम्	11
(क) अनौपचारिकम् पत्रम्	
(ख) औपचारिकम् पत्रम्	
3. अनुच्छेदलेखनम्	18
4. चित्रवर्णनम्	21
5. रचनानुवादः (वाक्यरचनाकौशलम्)	31
6. सन्धिः	38
7. समासाः	48
8. प्रत्ययाः	57
9. अव्ययानि	76
10. समयः	81
11. वाच्यम्	84
12. अशुद्धिसंशोधनम्	89
13. मिश्रिताभ्यासः	94
14. आदर्शप्रश्नपत्रम्	101
परिशिष्टम्	
व्यवहार-वाक्यानि	108
ध्येय-वाक्यानि	112
संवादाः	113



शिक्षिता बालिका
शिक्षितः समाजः
सशक्ता बालिका
सशक्तः समाजः
स्वस्था बालिका
स्वस्थः समाजः

